दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सितम्बर २०१९

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

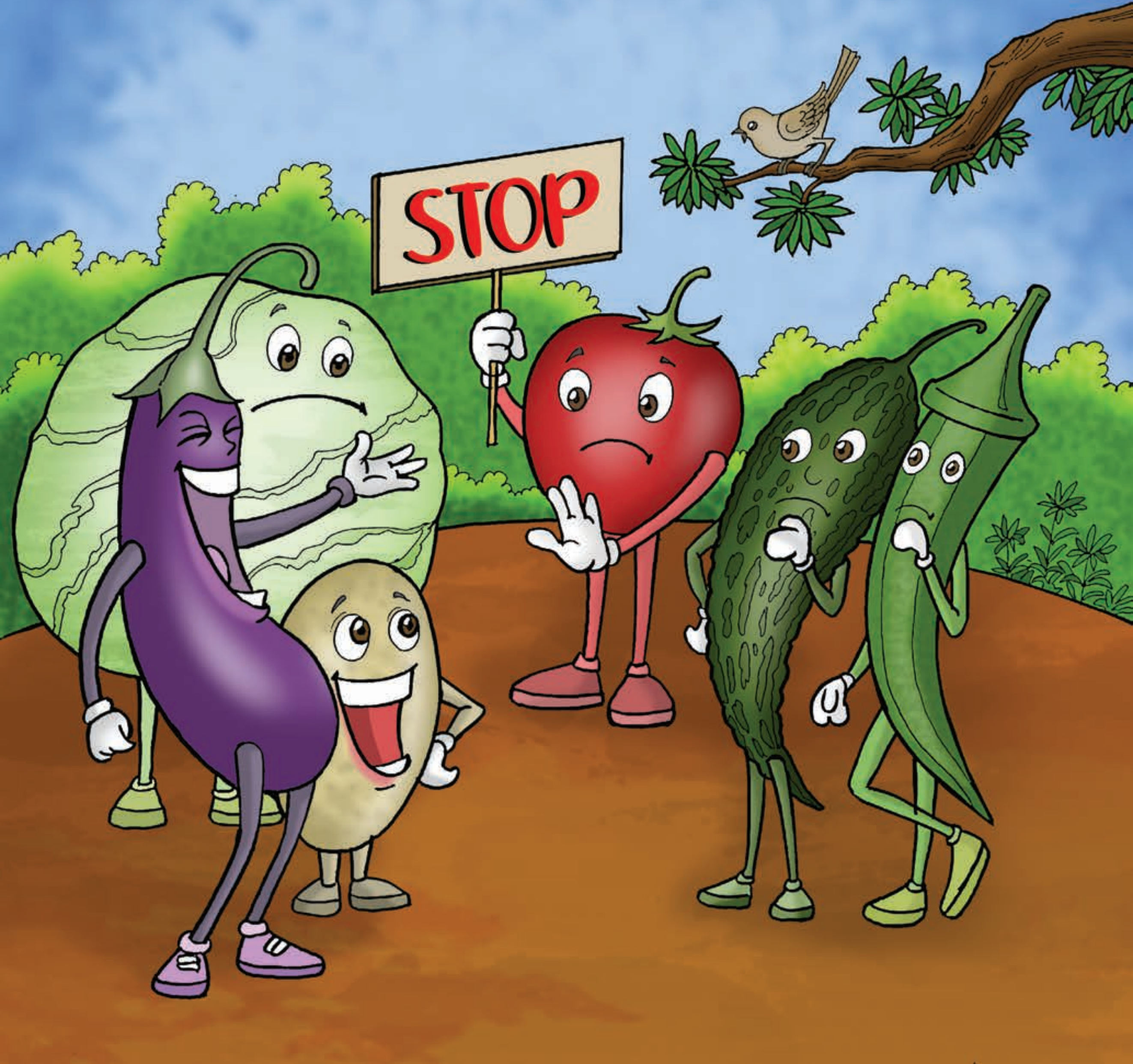

मज़ाक... क्यों नहीं?

संपादकीय

बालमित्रो,

क्या तुमने किसी का मज़ाक उड़ाया है? तो इसमें से खास ढूँढ निकालो कि...

दूसरों का मज़ाक उड़ाने से जायन्टस् का क्या हुआ?

निखिल ने किस तरह अनाया का मज़ाक उड़ाना बंद कर दिया?

और इसमें टेंगो ने भी, पिंगो से मज़ाक क्यों नहीं उड़ाना चाहिए वह सीख लिया वह तो वास्तव में ग्रेट कहा जाएगा।

इसके सिवाय इस अंक में एक पात्र तो ऐसा है जिसने खुद की मज़ाक उड़ाने वाले को एक ज़ोरदार पत्र लिखा। उसमें क्या लिखा था जानते हो? नहीं, नहीं... यह में नहीं बताऊँगा। वह तो आपको पढ़ना पड़ेगा।

तो चलिए... यह सब फटाफट पढ़ लेते हैं...
रेडी...स्टेडी...एन्ड गो...

-डिम्पल महेता

अक्रम एक्सप्रेस

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

वर्ष : ७ अंक: ६
अखंड क्रमांक: ७९
सितम्बर २०१९

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

© 2019, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

टैंगो-पिंगो

ही ही ही... इस पिंगो की चाल तो देखो! कोई उसे लकड़ी दो। बैचारा गिर जाएगा।
ज़ोर से हँसने लगा। रोते-रोते पिंगो अपने घर की ओर जा रहा था, कि वहाँ उसे सामने ओपी मिला।
क्या हुआ पिंगो? क्यों रो रहा है?
जब से वह टेंगो एथलेटिक चैम्पियन बना है तब से अन्य सभी की बहुत मज़ाक उड़ाने लगा है। उसमें भी मेरी मज़ाक उड़ाने में तो उसे बहुत मज़ा आता है।
मेरे पास एक जादू है।
क्या?
ओपी ने पिंगो के कान में अपना जादुई आइडिया बताया।

नहीं, मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा।
अरे, तू देखना तो सही इस जादू की असर!
दूसरे दिन,
कल दोपहर को तालाब के किनारे जंगल के सभी प्राणियों की रेस रखी है। टाइम से पहुँच जाना।
पिंगो का चेहरा बिल्कुल फीका पड़ गया।
यदि रेस में भाग लूँगा तो टेंगो को मुझे चिढ़ाने में बहुत मज़ा आएगा। यदि मैं भाग ही नहीं लूँ तो!
लेकिन मैं टेंगो की मज़ाक से क्यों डरूँ? ओपी के जादू का उपयोग करके तो देखूँ।
रेस के मैदान में,
वेलकम टू द रेस, माय डियर फ्रेन्ड्स। आज की रेस अलग है। आज रेस ज़मीन पर नहीं लेकिन पानी में होगी। फिनिश लाइन तालाब के उस पार है।

पिंगो की खुशी का पार नहीं रहा।
वह तो फटाफट तैरने लगा। और लंबी दूरी की रेस सरलता से जीत गया।
FINISH
टेंगो बड़ी मुश्किल से FINISH लाइन तक पहुँचा। उसे लगा कि पिंगो अब ज़रूर मुझ पर हँसेगा।
लेकिन...
टेंगो, तुझे स्वीमिंग सीखना है? मैं तुझे सिखाऊँगा।
पिंगों, मैं तेरी कितनी मज़ाक उड़ाता हूँ फिर भी तू मुझसे स्वीमिंग सीखने की बात कर रहा हूँ, आई एम वेरी सॉरी।
Akram Express

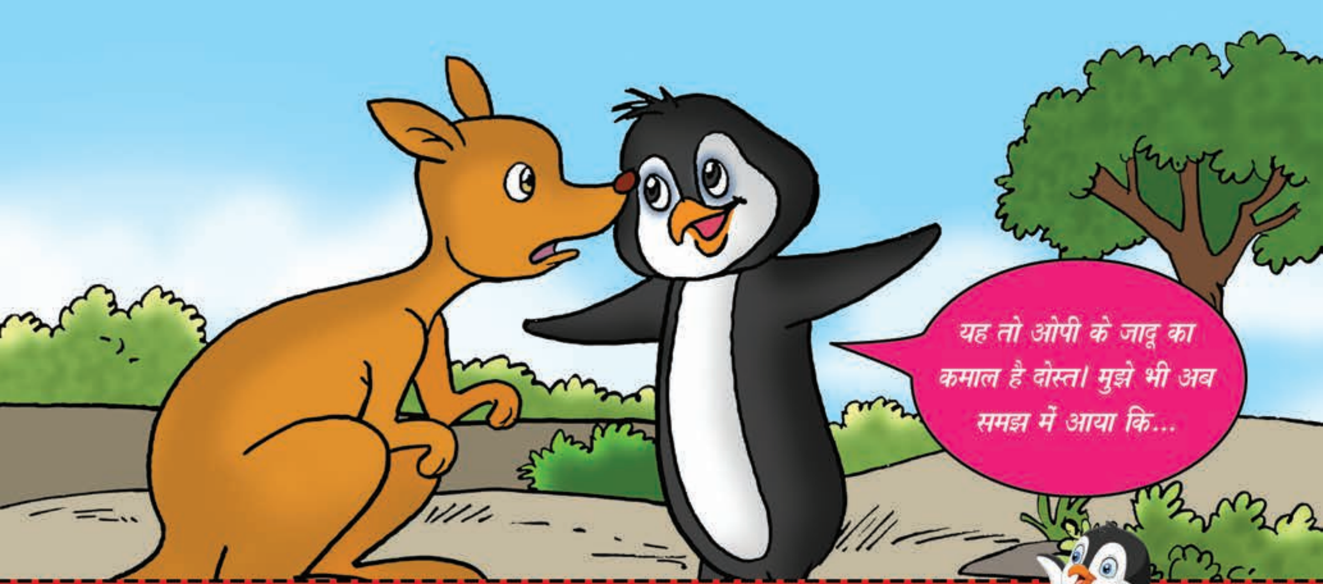

तो क्या होगा ओपी का जादू? पिंगो तो समझ गया। क्या आप समझे? तो नीचे लिखकर उसका फोटो खींचकर हमें **Whatsapp No. 8155007480** पर भेज दीजिए।

मुझे पहचानिए।

1

एक पर्वत ऐसा जो अगन ओकता जाए,
मूँह फाड़े तो गाँवों को नाश करता जाए।

2

एक जलकुकड़ी ऐसी, जो दबक डुबकी मारे,
पचास मील पानी में आकर तोप का गोला खाए।

3

ऊपर से खाओ और
अंदर से फेंक दो।

4

दो बहनें रो रोकर थकी,
लेकिन मिल नहीं सकी।

चित्र में दी हुई चीज़ें ढूँढिए।

चलो खेलो

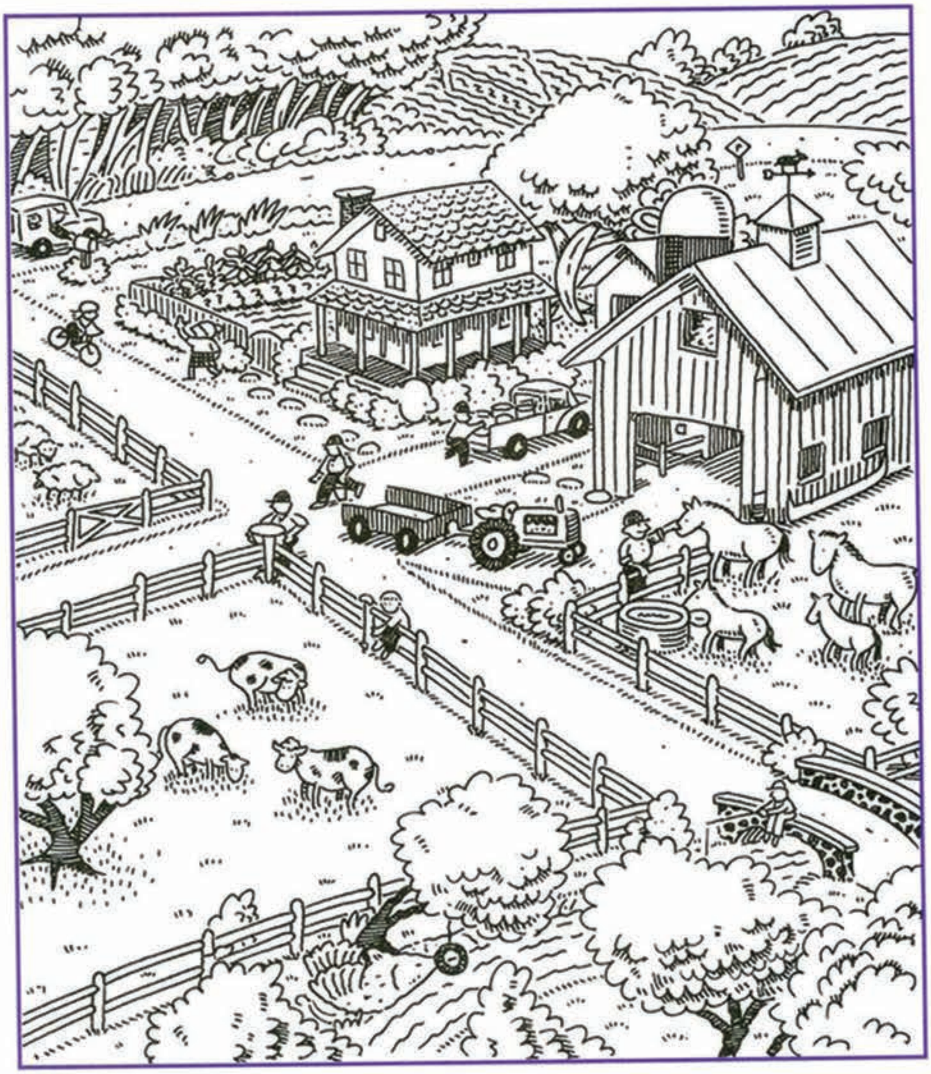

candle

key

fork

tack

carrot

rabbit

teacup

slice of pie

pencil

ring

fish

ice-cream cone

banana

nail

comb

ज्ञानी कहते हैं...

मज़ाक उड़ाने का नुकसान क्या है?

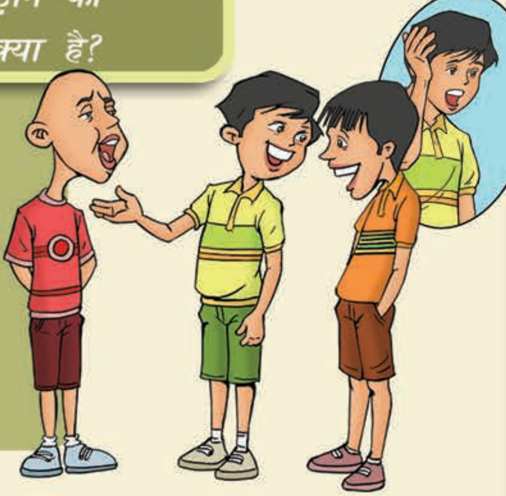

- किसी की प्रकृति की कमियाँ होती हैं, उ. दा. (जैसे) कोई तुतलाता है और हम उसकी मज़ाक उड़ाएँ तो उसे बहुत बड़ा अपमान लगता है।
- उस मज़ाक के दंड स्वरूप हमारे अंदर ऐसी डिफेक्ट आती है कि फिर लोग हमारी मज़ाक उड़ाते हैं।

कैसी मज़ाक बनानी चाहिए?

- निर्दोष मज़ाक होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को घाव नहीं लगे ऐसी।

मज़ाक बना दें तो?

- बहुत प्रतिक्रमण करने हैं। पलट जाना है और उससे कहना है कि तेरे साथ मज़ाक हो गई। दुःख मत लगाना। मेरी ही भूल हो गयी है। अब नहीं करूँगा।

निखिल & जायन्ट्स

"स्क्रि...च," बस की ब्रेक लगते ही जैसे अंदर बैठे हुए बच्चों के पंख लग गए। बस कैम्प ग्राउन्ड में पार्क हुई और अंदर बैठी हुई पलटन बाहर निकलने लगी।

"चलों बच्चों, अपने-अपने बैग्स लेकर अंदर जाइए। वहाँ नास्ता करके, आपको आपकी केबिंन्स दिए जाएँगे," मधु मैडम ने कैम्पिंग करने के लिए आए हुए बच्चों को सूचना दी।

"एय चश्मिश! तुझे इतने मोटे काँच में से बैग के कलर दिखते हैं? किसी और का बेग उठाकर मत चली जाना!" हर बार की तरह निखिल ने अनाया की मज़ाक उड़ाई। और हर बार की तरह निखिल की बातों की असर में आए बिना अनाया अपनी बैग लेकर वहाँ से चली गई।

नास्ता खत्म होते ही बच्चों को उस दिन के शेड्यूल का कागज़ दिया गया। कागज़ लेने के लिए अनाया निखिल के पास से निकली और निखिल को फिर से मज़ाक सूझी।

चली, चली, ओ चली, चली... चार आँखों वाली अनाया चली..." एक विचित्र ट्यून में निखिल ने गाना गाया और फिर खुद के दोस्त अमित ने हाई-फाई दी, दोनों ज़ोर से हँस पड़े।

"तभी मधु मैडम वहाँ आए।"

"क्या मैडम ने सुन लिया होगा!" सभी को डर लगा। लेकिन मैडम ने कुछ

कहा नहीं, इसलिए उन्हें थोड़ी "शांति" हो गई।

कैम्प-फायर के पास मज़ेदार गेम खेलने के बाद, स्टोरी टेलिंग की बारी आई। बच्चे मधु मैडम के आस-पास बैठ गए।

"तो आज की कहानी है, जायन्ट्स की," मधु मैडम ने अपनी स्टाइल से कहानी शुरू की।

"जायन्ट्स की गेंग एक जादुई नगरी में रहती थी। उन जायन्ट्स के पास ग़ज़ब की शक्ति थी। शक्ति का सदुपयोग करन के बजाय वे अपना पूरा समय एक वृद्ध का मज़ाक उड़ाने में निकाल देते थे। उम्र की वजह से वृद्ध को ठीक से दिखाई और सुनाई नहीं देता था। वृद्ध की उम्र का कुछ आदर रखे बिना जायन्ट्स बेफाम होकर वृद्ध को चिढ़ाते थे।"

एक जादूगर को इस बात का पता चला। उसने ऐसा जादुई मंत्र पढ़ा कि उस वृद्ध के लिए बोला गया हर एक मज़ाक का शब्द वृद्ध को ठीक करता गया और जायन्ट्स को उन्हीं शब्दों का उल्टा असर होने लगा। यदि कोई जायन्ट, वृद्ध को "बुड्ढा" कहता, तो उसी क्षण वृद्ध में सतेजता और जवानी की बढ़ोतरी होती और जायन्ट में मूर्खता और बुढ़ापे का असर हो जाता। जायन्ट्स मज़ाक उड़ाने में इतने मस्त थे कि उन्हें खुद में हुए बदलाव का ख्याल ही नहीं आया।

समय बितता गया और जायन्ट्स अन्जाने में ही वृद्ध बन गए। जब जादूगर ने उन्हें उनका रूप दिखाया तब

वे मज़ाक बनाने के भयानक परिणाम को देखकर स्तब्ध रह गए। जादुगर के पास बिनती करके अपना असली रूप वापस माँगा। लेकिन जादूगर टस से मस नहीं हुआ। वे पूरा जीवन ऐसे कुरुप बनकर ही रहे।

कहानी पूरी होने पर मधु मैडम ने कहा, "फ्रेन्ड्स, मज़ाक उड़ाने के भयंकर जोखिम हैं। मज़ाक के दंड स्वरूप हम में ही वह डिफेक्ट आ जाती हैं। निर्दोष हँसी-मज़ाक करों, लेकिन किसी व्यक्ति का मज़ाक तो नहीं उड़ाना चाहिए! समझ में आ रहा है?"

अमित ने निखिल के कान में धीरे से कहा, "लगता है, मधु मैडम ने अपनी मज़ाक कि बातें सुन ली हैं..." निखिल ने गरदन हिलाकर सहमति दिखाई।"

मधु मैडम ने कहा, "कल सुबह हम गुफाएँ एक्सप्लोर करने के लिए जाएँगे। गहरे जंगल में से पास होना है। इसलिए सभी को दो-दो की जोड़ी में जाना होगा।

मैडम ने एक के बाद एक सभी जोड़ी का नाम एनाउन्स किया। अंतिम जोड़ी का नाम बोलीं, "अनाया और निखिल को धक्का लगा। लेकिन वह चूप रहा।

दूसरे दिन जब अन्य बच्चों का उत्साह समा नहीं रहा था, तब निखिल बड़ी मुश्किल से अनाया के साथ चल रहा था। अनाया को परेशान करने के लिए, निखिल ने ज़रा भी जल्दी नहीं की। फायनली जब वह खड़ा हुआ तब वास्तव में सभी बहुत आगे निकल गए थे।

अचानक निखिल रूक गया।

अनाया ने पूछा, "क्या हुआ निखिल, रुक क्यों गया?"

अनाया को कोई जवाब दिए बिना, निखिल आधे पैर पर बैठकर, अपनी शु-लेस बाँधने लगा।

"जल्दी कर निखिल। हम पीछे रह जाएँगे," अनाया ने अधीरता से कहा।

जैसे ही थोड़े आगे बढ़े कि निखिल का पैर, पत्तों से ढ़के हुए एक गड्ढे में पड़ा और वह नीचे गिर पड़ा। गिरते समय उसने अनाया का हाथ पकड़ लिया और दोनों एक अँधेरे तेखाने में गिरे।

"ओह नो! यह हम कहाँ आ गए?" निखिल और अनाया भयभीत हो गए।

"हेल्प! हेल्प! कोई है?" अनाया और निखिल ने बहुत आवाज़ लगाई। लेकिन उनका आवाज़ सुनने के लिए कोई नहीं था।

निखिल बेचैन हो गया। "अब क्या होगा?" हमें बाहर निकलने का रास्ता कैसे मिलेगा? "यहाँ तो कुछ दिखता ही नहीं।"

दूसरी ओर, अनाया स्थिर होकर सोच रही थी! " उसने देखा कि अँधेरी गुफा में सूर्य की एक किरण पड़ रही थी। अनाया को एक युक्ति सूझी। एक हाथ में उसने अपना चश्मा पकड़ा और दूसरे हाथ में नीचे पड़ी हुई लकड़ी की डाली ली। उसने चश्में के काँच का मेग्निफाइंग ग्लास की तरह उपयोग करके, सूर्य की किरण काँच पर फोकस की। कुछ ही क्षणों में डाली में एक ज्योति प्रकट हुई।

"वाऊ!" निखिल, तो अनाया की सूझ देखकर दंग रह गया।

"चल निखिल, अब हमें बाहर निकलने का रास्ता मिल जाएगा," अनाया ने निडरता से कहा।

दोनों ने मिलकर दो-तीन डालियों पर ज्योति प्रगटाई। प्रकाश हुआ और थोड़ी ही देर में उन्हें बाहर जाने का रास्ता भी मिल गया।

देखा कि मधु मैडम थोड़ी दूर एक सिक्योरिटी गार्ड के साथ बातें कर रहे थे।

"मैडम!!" अनाया ने ज़ोर से आवाज़ लगाई और दौड़ती हुई मैडम को चिपक गया। पीछे निखिल भी आ

गया।

मैडम ने दोनों बच्चों को गले लगा लिया।

"थेंक-गॉड, आप सुरक्षित हो!" मैडम की आवाज़ में ज़बरदस्त राहत थी।

बच्चों ने पूरी घटना का वर्णन किया। सिक्योरिटी गार्ड ने दोनों बच्चों से शेक हेंड किया। "ग्रेट जॉब! लिटिल चेम्प्स," कहकर उन्होंने यहाँ से विदाई ली।

निखिल की आँखें नम थीं। "आई एम वेरी सॉरी अनाया," निखिल धीरे से बोल, "मैं हमेशा तेरी मज़ाक उड़ाता था कि तुझे ठीक से दिखता नहीं है। लेकिन दिखता तो मुझे नहीं था। यदि आज तुझे यह उपाय नहीं सूझता तो पता नहीं क्या होता!"

अनाया ने कहा, "देट्स ओके निखिल।"

मधु मैडम शांति से दोनों बच्चों का निरीक्षण कर रहीं थीं।

"मैडम, अभी मैं उस गंदे जायन्टस् की तरह लग रहा हूँ।" निखिल की आँख में से आँसू की बूँद गिर पड़ी।

मैडम ने कहा, "निखिल, उन जायन्टस् के पास तो मज़ाक उड़ाने के जोखिमों से छूटने का कोई उपाय नहीं था। लेकिन, तुमने तो छूटने के रास्ते का पहला कदम उठा लिया है।"

निखिल को कुछ समझ में नहीं आया, "कौन सा कदम?"

मैडम ने समझाया, "जिस क्षण तुम्हें अपनी भूल समझ में आ गई और पश्चाताप हुआ, उसी क्षण तुमने मज़ाक के परिणाम में से छूटने का पहला कदम उठा लिया!"

यह सुनकर, निखिल ने हल्कापन महसूस किया।

कैम्प साईट पर बच्चे अधीरता से निखिल और अनाया का इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें देखते ही बच्चे बहुत खुश हो गए।

मधु मैडम ने एनाउन्स किया,"आज रात को आइसक्रीम पार्टी हो जाए!"

उस रात बच्चों ने आइसक्रीम के साथ निर्दोष हँसी-मज़ाक की मज़ा ली।

Play with Words

क्या आपको कहानियों में कुछ शब्द कठिन लगे?
चलो ढूँढ़ते हैं उन कठिन शब्दों के अर्थ...

1. कटाक्ष - (A) आक्षेप (B) अंगूर (C) रंग
2. पराकाष्ठा - (A) नास्ता (B) हद (C) खिलौना
3. धासको - (A) कंधा (B) त्रास (C) चोटी
4. परेशानी - (A) खेलना (B) झाडू (C) परेशान करना
5. स्कोलरशिप - (A) शिष्यवृत्ति (B) नाव (C) शर्ट
6. भयानक - (A) आँवला (B) डरावना (C) आम
7. कॉन्फिडेन्ट - (A) कॉफी (B) दाँत (C) आत्मविश्वास
8. घातक - (A) हत्या करने वाला (B) चिड़िया (C) बरसात

Fun Fact

*खास नोंध : बच्चों को खास यह प्रयोग वडीलों की हाज़िरी में ही करना है।

कागज़ पर बिलोरी काँच या चश्मे को सेट करके सूर्य की किरणें सीधे उस पर पड़ें, इस तरह पकड़कर रखने से एक प्रकाश का बिंदु दिखेगा। आप देखोगे कि कुछ ही मिनटों में सूर्य की गर्मी से कागज़ में से धूँआ निकलना दिखेगा। और कागज़ में अग्नि प्रकट हो जाएगी। इस तरह दियासलाई के बिना भी अग्नि उत्पन्न हो सकती है। इस क्रिया को वक्रीभवन की क्रिया कहते हैं।

यह तो नई ही बात है !

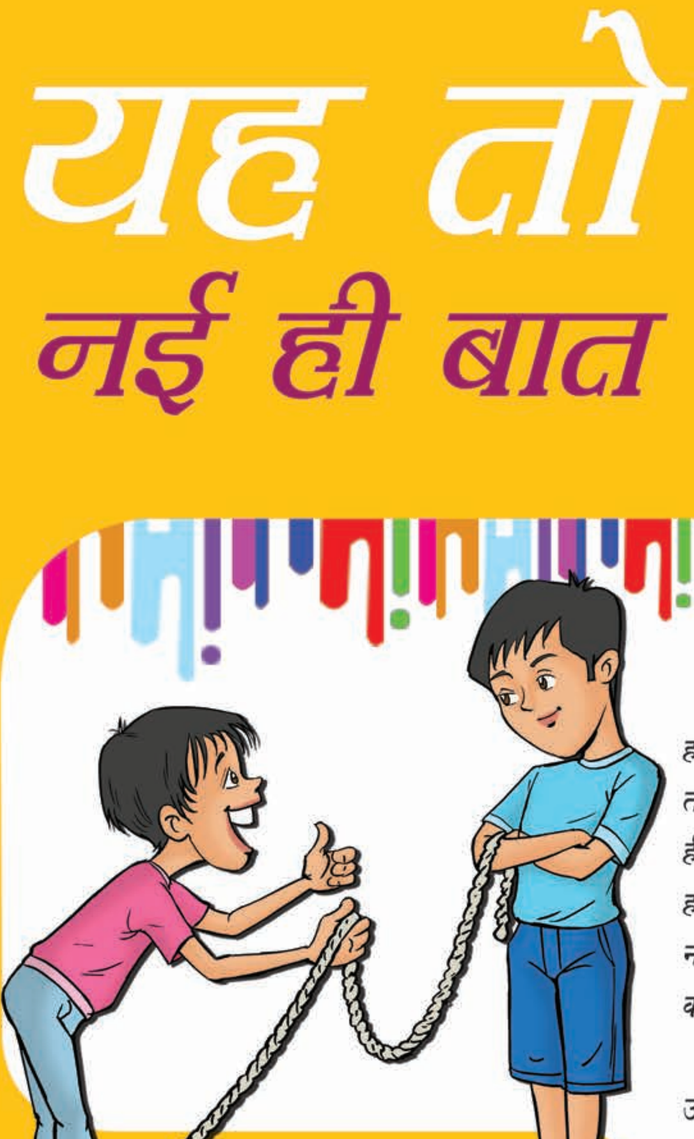

जैसे यदि डोरी खींच रहा हो हमने डोरी खींची ही नहीं या ढीली रखी तो सामने वाले को डोरी खींचने में मज़ा ही नहीं आएगा। इसी तरह यदि कोई हमारी मज़ाक बनाए तो हमें अंदर छूने नहीं देना है। तो वह मज़ाक उड़ाना बंद कर देगा।

जब तक कोई हमारी मज़ाक उड़ाए और हम दुःखी हो जाए तब तक उसे हमारी मज़ाक उड़ाने में मज़ा आएगा।

मज़ाक उड़ाने के
परिणाम स्वरूप सामने
वाला डिप्रेशन में भी
जा सकता है।

मज़ाक कौन उड़ाता है... जिसके खुद के अंदर शांति नहीं होती है। इसलिए जब वह ओरों को छेड़ आता है, मज़ाक बना (उड़ाते) आता है, दुःख दे आता है तब उसे सुख आता है।

जीवंत उदाहरण

Born: 12 May 1997 (Coppell, Texas, United States)
Age: 22 years
Weight: 145 kg
Height: 1.96 m
Nationality: American
School: The University of Texas at Austin

कोनर विलियम्स अर्थात् फुटबॉल जगत् का एक चमकता सितारा। सफलता के शिखर पर पहुँचने से पहले कोनर ने मज़ाक की भयानक क्रूरता का सामना किया था। कोनर ने उस समय का विस्तृत वर्णन, एक हृदयस्पर्शी पत्र में किया है।

मेरा मज़ाक उड़ाने वाले प्रिय मित्रों,

थैंक यू!

नहीं, यह मैं कटाक्ष में नहीं कह रहा। और मुझे आपके प्रति कोई बैर भाव या गुस्सा भी नहीं है। मैं तो हृदय से आपका आभार मानता हूँ। आपने हेरान नहीं किया होता तो शायद आज मैं इस स्तर पर नहीं पहुँच सका होता।

बचपन से ही मुझे बोलने की तकलीफ थी। शब्दों का उच्चारण ठीक से नहीं कर पाता था इसलिए मुझे बोलना भी अच्छा नहीं लगता था। प्रेज़न्टेशन देने में मुझे घबराहट होती थी क्योंकि मुझे डर था कि आप मेरी मज़ाक उड़ाओगे। और मेरी मज़ाक उड़ाने का एक भी मौका छोड़ा नहीं था। ऊपर से मैं गोलमटोल था। मैरे बजन का मज़ाक उड़ाने में एक भी शब्द आपने बाकी नहीं रखा था।

कभी-कभी मुझे तुम्हारे साथ घूमने-फिरने का बहुत मन होता। कई बार आपके साथ एक्टिविटी में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की। लेकिन आपने मुझे कभी शामिल नहीं किया। आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि मेरा दिल कितना टूट जाता था। आपने हमेशा मुझे अकेला कर दिया... बिल्कुल अकेला।

मुझे ऐसा एक भी दिन याद नहीं है कि जब मैं रो कर स्कूल से घर नहीं लौटा। मैं रोज़ रात को प्रार्थना करता कि मैं बदल जाऊँ या तो मुझे देखने की आपकी द्रष्टि बदल जाए।

आपको पता है कि नापसंद और अकेलापन कितना घातक होता है? मेरे पेरेन्ट्स के प्रेम और हूँफ के बिना मैं कठिन समय नहीं निकाल पाता।

एक समय ऐसा आया कि मेरी सहन शक्ति की पराकाष्ठा आ गई। मैंने अपने डेडी से जाकर कहा, "मुझे ऐसा नहीं रहना है। मुझे बदलना है।" डेडी, मेरे इन्हीं शब्दों का इंतज़ार कर रहे थे। आंतरिक तैयारी होने के साथ ही मेरे में ज़बरदस्त परिवर्तन आ गया। दूसरे ही दिन से सुबह साड़े पाँच बजे उठकर कसरत करने लगा। डेडी ने मेरे लिए रुटीन बना दिया था और मैं सिन्सियरली उस रुटीन को फोलो करने लगा।

उस रुटीन को फोलो करने से, बदलाव सिर्फ मेरे शरीर में ही नहीं, मेरे आत्मविश्वास में भी आया। मैं बहुत कॉन्फिडन्ट बन गया। और बस, तब से मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

फुटबोल टीम में मेरा सिलेक्शन हो गया। जूनियर सीज़न में मुझे देश की नामी यूनिवर्सिटी में से करीब ३७ स्कोलरशिप ऑफर्स मिलीं। अचानक आप सभी मेरे साथ दोस्ती करने के लिए तत्पर हो गए।

फुटबोल जैसी सिम्पल गेम आप जैसे लोगों की द्रष्टि कितनी बदल सकती है। आप लोगों की मज़ाक ने मेरी गढ़ाई की। मुझे इस बात का आनंद है कि मैं वह बच्चा था जिसकी मज़ाक उड़ाई गई, और यह नहीं कि किसने मज़ाक उड़ाई। मैं कभी नहीं चाहूँगा कि मेरे साथ जो बीता वह किसी और के साथ भी बीते। लेकिन यह बात पक्की है कि आपके बिना मैं सफलता के शिखर पर कभी नहीं पहुँच सका होता।

आपने मुझे नम्रता, आदर और संभाव रखना सिखाया। आपने मुझे फ्रेन्डशिप और फैमिली का महत्व सिखाया।

मुझे आशा है कि मज़ाक का पात्र बनकर जितना मैं सीखा हूँ, उतना शायद आज मज़ाक उड़ाकर आप भी सीखे होंगे।

My Creation

Sorry Card

1

2
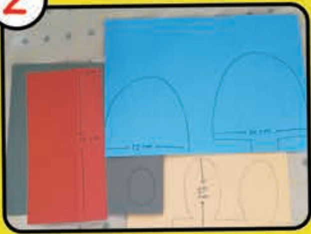

3
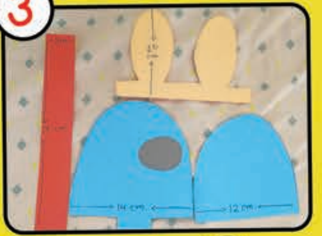

4

5

6

7

8
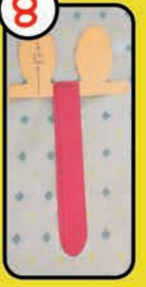

9

10

11

12

13

14

FRIENDS, *यह कार्ड बनाकर अपनी क्रिएटिविटी बढ़ाइए और खास आपके द्वारा जिसको भी दुःख दिया गया है उसे यह कार्ड देकर माफी माँगकर हल्केफूल हो जाइए...*

QR Code *को* **Scan** *करके* **Sorry Card** *का* **Making Video** *देखिए।*

Play with Words

1 - (A) 3 - (B) 5 - (A) 7 - (C)

2 - (B) 4 - (C) 6 - (B) 8 - (A)

अडालज त्रिमंदिर में पूज्यश्री की उपस्थिति में जन्माष्टमी महोत्सव की झलक...

HAPPY JANMASHTAMI

पपेट शो

मटकी फोड

Akram Express

September 2019
Year : 7, Issue : 6
Conti. Issue No.: 79

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081\2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अडालज त्रिमंदिर में "सुख की दुकान" का पूज्यश्री ने किया Re Opening

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद प्रप हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर स्रूस करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.,** २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025